52

बदला हुआ जीवन

(12:1, 2)

रोमियों की पुस्तक के आठ अध्यायों में हमने अपने उद्धार के आधार पर पौलस की टिप्पणियों का अध्ययन किया और तीन अध्यायों में हमने ''यहूदी समस्या'' पर विचार किया। अन्तिम अध्याय प्रेरित द्वारा बताई गई हर व्यवहारिक प्रासंगिकता पर केन्द्रित है। (इस पुस्तक में कहीं और रोमियों की रूपरेखा देखें।) पौलुस धर्मशास्त्रीय विचार की सबसे ऊंची चढ़ाइयों तक जा सकता था, परन्तु उसने अपने पांव मज़बूती से ज़मीन पर गाड़कर समापन किया, जहां हम रहते हैं। उसे विश्वास और व्यवहार दोनों का ध्यान था।[1] उसने केवल सीखने पर ही नहीं बल्कि जीने पर भी यानी केवल ड्रॉक्ट्रिन पर नहीं, बल्कि कर्त्तव्य पर भी ध्यान दिया।[2] आर. सी. बैल ने रोमियों की पुस्तक के आरम्भिक अध्यायों को ''जड़'' और अन्तिम अध्यायों को ''फल'' कहा।[3]

प्रासंगिकता वाला भाग वचन के बड़े अध्यायों में से एक रोमियों 12 से आरम्भ होता है। मैंने पहले कहा था कि रोमियों 8 बाइबल में मेरा पसंदीदा अध्याय है। रोमियों 12 मेरी मां का पसंदीदा अध्याय था। अपने जीवन के अन्तिम महीनों में शारीरिक तौर पर वह कई बार आराधना के लिए आराधनालय जाने में असमर्थ होती थी। कई बार मैं रविवार सुबह उसके साथ रुकता ताकि पिता जी आराधना में भाग ले सकें। मां और मैं मिलकर घर में आराधना करते और प्रभु भोज लेते थे। आराधना के दौरान मैं उससे पूछता कि मैं उसके लिए कौन सा वचन पढ़ूं, तो उसका स्पष्ट उत्तर होता था, ''रोमियों 12.'' मेरी मां रोमियों 12 के लिए अपने प्रेम में अकेली नहीं थी। यह बहुत से लोगों का पसंदीदा अध्याय है। जे. डी. थॉमस ने कहा है, ''बाइबल में आपको मसीही जीवन का इससे बेहतर सार नहीं मिलेगा।''[4]

यह पाठ 12:1, 2 पर है। ये आयतें अध्याय 12 से 16 की सजावट के लिए मंच तैयार करती हैं। यदि हम वही करें जो पौलुस ने रोमियों 12:1, 2 में मसीही लोगों से करने के लिए कहा, तो हमें 12:3–16:27 में मिलने वाली कोई भी शर्त को पूरा करने में इतनी कठिनाई नहीं होगी।

बाहर से बदला हुआ (12:1)

पौलुस का ढंग (आयत 1क-ग)

हमारे वचन पाठ का आरम्भ ''इसलिए'' (*oun*) के साथ होता है। पौलुस आमतौर पर अपने पिछले पूरे किए गए विचारों के साथ कुछ कहने के लिए जोड़ते हुए ''इसलिए'' के साथ नये भाग को आरम्भ करता था (देखें 1:24; 2:1; 5:1, 12; 6:12; 7:4, 13; 8:1)। 12:1 में ''इसलिए'' रोमियों के अन्तिम भाग की प्रासंगिकता को पत्र के पहले भाग की शिक्षा के साथ जोड़ता है। पौलुस ने ज़ोर दिया था कि मसीही लोग विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं। यहां उसने विस्तार से बताया कि धर्मी ठहराए व्यक्ति को विश्वास से कैसे जीना चाहिए।

पौलुस ने कहा, ''इसलिए मैं विनती करता हूं'' (12:1)। KJV में है ''मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं।'' NEB में है ''मैं तुमसे विनती करता हूं।'' कई अनुवादों में है ''मैं तुम से भीख मांगता हूं'' (फिलिप्स; मैकॉर्ड; जेबी)। अपने पाठकों को आज्ञा देने के बजाय पौलुस ने उनसे आग्रह किया, विनती की, प्रार्थना की, मिन्नत की। शायद उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि परमेश्वर मजबूरी में दी गई भेंट नहीं बल्कि स्वेच्छा से किया गया बलिदान चाहता है।

''विनती'' *parakaleo* का अनुवाद है जिसका मूल अर्थ ''अपनी ओर बुलाना'' है[5] (*kaleo* [''बुलाना'']) के साथ (*para* [''समीप'']) रूपक किसी मित्र को अपनी ओर बुलाना है, शायद उसके गले में बांह डालकर, उसकी आंखों में झांकते हुए, और यह कहते हुए, ''भाई, मैं पूरी ताकत से तुझे यह करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूं।'' डेल हार्टमैन ने टिप्पणी की, ''यदि पौलुस ज़ोर देने के लिए रेखांकित करने का इस्तेमाल करता तो वह इन शब्दों को और इनसे अगले शब्दों को रेखांकित कर देता।''[6] प्रेरित यह बताने वाला था कि रोमियों की पुस्तक पढ़ने के परिणामस्वरूप व्यक्ति को क्या *करना* चाहिए।

पौलुस ने अपना स्नेहपूर्ण, अर्थात ''भाइयो'' (आयत 1ख) शब्द वाला निजी ढंग जारी रखा। यहां से पत्र के अन्त तक उसने रोम के अपने *सब* आत्मिक भाइयों और बहनों को सम्बोधित किया, चाहे वे यहूदी हों या अन्यजाति।

पौलुस ने अपने भाइयों से ''परमेश्वर की दया[7] [*oiktirmos*[8] से] स्मरण दिलाकर विनती की'' (आयत 1ग)। ''परमेश्वर की दया'' पिछले अध्यायों में ठहराई गई परमेश्वर की दया की कई अभिव्यक्तियां हैं: हमारे उद्धार में परमेश्वर की दया, मसीही जीवन जीने में हमारी सहायता करने में उसकी दया, आदि। उसकी दया ''को ध्यान में रखते हुए'' (NIV) हमें कुछ भी करने को तैयार रहना चाहिए जो वह हम से करने को कहता है। ''जब आप विचार करते हैं कि उसने आपके लिए क्या किया, तो क्या यह बहुत अधिक मांगना है?'' (NLT)।

पौलुस की अपील (आयत 1घ)

पौलुस ने मसीह में अपने भाइयों और बहनों से क्या करने की विनती की? पहले तो उसने उन्हें ''अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके'' चढ़ाने को कहा (आयत 1घ)। इन शब्दों का हम में से कइयों की अपेक्षा पहली शताब्दी के पाठकों के लिए अधिक अर्थ था। सदियों से यहूदी लोग मन्दिर में बलिदान के लिए जानवर लाते थे। अन्यजातियों की आराधना पूरी तरह बलिदानों पर भी केन्द्रित थी। मसीही लोगों को पौलुस की चुनौती में जानवरों के बलिदानों के साथ तुलना और अन्तर दोनों हैं, विशेषकर यहूदी धर्म के लोगों के लिए। आइए इस अद्‌भुत चुनौती को विस्तार से देखें:

- ''*अपने* शरीरों को''–*आपको अपने* शरीरों को चढ़ाना है पेश करना है। कोई जानवर मन्दिर में कभी यह कहते हुए नहीं घुसा कि ''मैं आ गया हूं! मुझे बलिदान करो!'' परन्तु मसीही व्यक्ति वास्तव में ऐसा करता है। इस अर्थ में मसीही व्यक्ति याजक और बलिदान दोनों है
- ''अपने *शरीरों को* ''–जानवरों को बलिदान करने के बजाय मसीही लोगों को अपने ही

शरीरों अर्थात अपने जीवनों को परमेश्वर के सामने चढ़ाना है।

- ''जीवित''–मृत जानवरों के बजाय मसीही लोग जीवित बलिदान चढ़ाते हैं।[9]
- ''और पवित्र''–परमेश्वर को चढ़ाए गए बलिदान पवित्र (उसके लिए अलग किए हुए) और बिना दोष के होने आवश्यक थे (देखे लैव्यव्यवस्था 1:3; 1 पतरस 1:19; मलाकी 1:8)। मसीही लोगों के लिए परमेश्वर को हमेशा अपनी बेहतरीन भेंटें देना आवश्यक है।
- ''परमेश्वर को भावता हुआ''–अनुवादित शब्द ''भावता हुआ'' (*euarestos*) का मूल अर्थ ''अच्छी–पसन्द'' है (*eu* [''अच्छी''] के साथ erestos [''पसन्द''])। पुराने नियम के समयों में जब परमेश्वर के निर्देश के अनुसार जानवरों को बलिदान किया जाता था, तो धुआं ''यहोवा के लिए सुखदायक सुगंध'' के रूप में ऊपर उठता था (गिनती 15:3; NIV)। वैसे ही वह आत्मिक बलिदान जिसकी चर्चा हम कर रहे हैं परमेश्वर को पसन्द आता है और उसे भाता है।
- ''बलिदान''–''आरम्भिक दिनों में दिए जाने वाले जानवरों के बलिदानों को मसीह की अपनी भेंट के द्वारा सदा के लिए मिटा दिया गया, परन्तु आज्ञाकारी मनों द्वारा की जाने वाली आराधना के लिए जगह रहती ही है।''[10] पतरस ने मसीही लोगों को लिखा, ''तुम ... जीवते पत्थरों की नाईं आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं'' (1 पतरस 2:5)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने यीशु के हर अनुयायी को यह चुनौती दी: ''... हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात उन होंठों का फल अर्थात जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सदा चढ़ाया करें। भलाई करना और उदारता दिखाना न भूलो, क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है'' (इब्रानियों 13:15, 16)।
- ''चढ़ाओ''–''चढ़ाओ'' शब्द *paristemi* से लिया गया है और इसका मूल अर्थ ''एक ओर रखना'' है (*hispemi* [''रखना'' के साथ] *para* [''के साथ''])। इसका इस्तेमाल यहोवा के सामने भेंट रखने के अर्थ में किया जाता था। यह ''लेवीय शिकारों तथा भेंटों को प्रस्तुत करने के लिए तकनीकी शब्द'' था।[11]

रोमियों की पुस्तक में पहले पौलुस ने अपने पाठकों को चुनौती देने के लिए ''चढ़ाओ'' (*parispami*) और ''शरीर'' (*soma*) शब्दों का इस्तेमाल किया:

> ... न अपने *शरीर* के अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को *सौंपो,* पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को *सौंपो,* और अपने अंगों [अपने *शरीर* के अंगों] को धर्म के हाथियार होने के लिए परमेश्वर को सौंपो (6:13)।

कई लेखक और अनुवादक 12:1 में ''शरीरों'' शब्द की व्याख्या ''अपने आपको'' के रूप में करते हैं। हमें अपना सब कुछ और जो हमारे पास है, उसे परमेश्वर को देना है, परन्तु पौलुस का ''शरीरों'' शब्द का इस्तेमाल करने का कोई कारण होगा। रोमियों के नाम अपने पूरे पत्र में,

पौलुस ने भौतिक शरीर पर आत्मिक शत्रुओं के बड़े स्रोत के रूप में ज़ोर दिया है। शरीर की निर्बलता के कारण हम पाप की व्यवस्था की सेवा करते हैं (7:25)। हमारे ऊपर छोड़ा जाने पर, शारीरिक देह की ओर खींचना हमें दबाव में डाल सकता है और डाल देगा (7:5, 18, 23, 24), परन्तु अध्याय 8 में पौलुस ने घोषणा की कि परमेश्वर के आत्मा के द्वारा हम ''शरीर के कामों'' को मार सकते हैं (8:13)। अब वह यह कहने को तैयार था कि यह शरीर ''जो किसी समय अधर्म का हथियार था, जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भाता हुआ बलिदान करके'' चढ़ाया जा सकता है।

मसीहियत की पहचान एक ऐसे धर्म के रूप में हुई है जो शरीर को इसका सही सम्मान और आदर देता है।[12] ''यूनानी लोगों की नज़र में, ... शरीर केवल एक कैदखाना था, यानी ऐसी जगह जो तुच्छ जानी जाती है और शर्मिंदगी की बात थी।''[13] इसके विपरीत मसीही व्यक्ति इस बात को समझता है कि उसका शरीर ''पवित्र आत्मा का मन्दिर'' है (1 कुरिन्थियों 6:19)। वह अपने शरीर में परमेश्वर को महिमा दे सकता है और मसीह को ऊंचा कर सकता है (1 कुरिन्थियों 6:20; फिलिप्पियों 1:20)।

परमेश्वर को बलिदान के रूप में शरीर भेंट करने में क्या शामिल है?[14] इब्रानियों 13:15, 16 एक संकेत देता है जिसमें परमेश्वर की स्तुति करने, भलाई करने और बांटने की बात कही गई है। ये ऐसे बलिदान हैं जिनसे परमेश्वर प्रसन्न होता है। हम अपनी शारीरिक योग्यताओं और गुणों का इस्तेमाल उसकी महिमा के लिए करते हुए अपनी देहें परमेश्वर के सामने भेंट करते हैं। जॉन आर. डबल्यू. स्कॉट ने लिखा है कि यदि हम अपने शरीर परमेश्वर को अर्पित करें तो क्या होगा:

> तब हमारे पांव उसके पथों पर चलेंगे, हमारे होंठ सच्चाई बोलेंगे और सुसमाचार फैलाएंगे, हमारी जीभें चंगाई देंगी, हमारे हाथ गिरे हुओं को उठाएंगे और छोटे-छोटे काम करेंगे ... जैसे खाना बनाना, साफ़ सफ़ाई करना, टाईप करना और मरम्मत करना; हमारी भुजाएं तन्हा और त्यागे हुए लोगों को गले लगाएंगी; हमारे कान निराश लोगों की पुकार सुनेंगे, हमारी आंखें विनम्रता से और धीरज रखकर परमेश्वर की ओर देखेंगी।[15]

पौलुस ने कहा, परमेश्वर को शरीर भेंट करना ''तुम्हारी आत्मिक सेवा है'' (रोमियों 12:1, 2)। इस वाक्यांश में दो अस्पष्ट शब्द हैं। पहला तो वह शब्द है जिसका अनुवाद आत्मिक है: *logikos*। *Logikos logos* (''वचन'') से लिया गया है और इसी से ''लौजिक'' शब्द निकला है। डब्ल्यू. ई. वाईन ने कहा है कि *logikos* में ''तर्कसंगत योग्यता'' है और इसका अर्थ ''तर्कसंगत'' या ''युक्तिसंगत'' है।[16] अधिकतर आधुनिक अनुवाद आयत 1 में ''आत्मिक'' शब्द को प्राथमिकता देते हैं, परन्तु एक अलग यूनानी विशेषण का विशेष अर्थ ''आत्मिक'' (*pneumatikos*) है। इस विशेष आयत में *logikos* के लिए ''युक्तिसंगत'' या ''तर्क दिया'' अधिक स्वाभाविक पसंद लगती हैं।

परमेश्वर को बलिदान के रूप में हमारे शरीर किस ढंग से या ढंगों से ''युक्तिसंगत'' माने जा सकते हैं? (1) उस सब पर जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है विचार करना एक युक्तिसंगत विनती है। (2) हम तर्क, विवेकी जीव के रूप में परमेश्वर के प्रेम को स्वीकार करते हैं। (3) यह बलिदान भेंट करते हुए, हम सोच समझकर, समझदारी से ऐसा करते हैं।

तीसरे सुझाव के बारे में जो अभी दिया गया है, हम प्रभु के लिए *जो कुछ* भी करें उसमें विचार शामिल होना चाहिए। हमें संस्कार में अर्थात लोगों के ढंग से उसकी सेवा कभी नहीं करनी चाहिए। जब मैं अबिलेन, टैक्सस में कॉलेज में था तो मैं राज्य के पश्चिमी भाग नॉअट की छोटी मण्डली में काम करता था। रविवार रात को तीन घण्टे का सफ़र करके वापस अबिलेन जाने में मैं हमेशा लेट हो जाता था और आम तौर पर थक जाता था। कई बार मैं किसी ऐसे नगर में से गाड़ी ले जाता था जिसके अगले रास्ते भूल जाते थे। चकाचौंध में गाड़ी चलाना खतरनाक है और चकाचौंध में परमेश्वर की सेवा करना उससे दोगुना खतरनाक है। जब हम परमेश्वर की आराधना करते हैं तो हमारे मन उस पर और जो हम कर रहे होते हैं उस पर लगे होने आवश्यक हैं। प्रभु के लिए हमारी *हर* सेवा में यही बात लागू होती है।

दूसरा, NASB में अनुवाद किया गया अस्पष्ट शब्द ''आराधना की सेवा'' है: *latreia*। *Latreia* क्रिया *latreuein* का संज्ञा रूप है।

> मूल में *latreuein* का अर्थ *भाड़े या वेतन के लिए काम करना* था ... फिर इसका अर्थ बिल्कुल आम अर्थ में *सेवा करना* के लिए हो गया। ... अन्त में यह विशेष रूप से *देवताओं की सेवा* के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द बन गया। बाइबल में इसका अर्थ कहीं भी मानवीय सेवा नहीं है; इसका इस्तेमाल परमेश्वर की सेवा और आराधना के लिए ही हुआ है।[17]

''सेवा'' और ''आराधना'' दोनों *latreia* को अनुवाद करने का न्यायसंगत ढंग है। KJV सहित कई अनुवादों में ''सेवा'' है। कई अन्य अनुवादों में, जैसे NIV में ''आराधना'' है। NASB के अनुवादकों ने, दोनों शब्दों के बीच का शब्द चुनने के बजाय वाक्यांश में ''आराधना की सेवा'' दोनों ही लगा दिए। पहले रोमियों 9:4 में NASB में *latreia* का अनुवाद सामने ''मन्दिर'' जोड़ते हुए ''सेवा'' किया गया है। (इससे मेल खाता एक शब्द *leitourgia* जिससे कई डिनोमिनेशनों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली उपासना पद्धतियों के लिए शब्द ''लिटरजी'' मिला है।)

लेखक *latreia* शब्द की व्याख्या करने में कुछ अधिक ही आगे निकल गए हैं। कइयों ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि यह शब्द केवल परमेश्वर की सामान्य ''सेवा'' के लिए है और इसका अर्थ आराधना *नहीं* है। रोमियों 12:1 में *latreia* से आराधना का किसी भी प्रकार का तत्व निकालना अति लगता है।[18] इस आयत में पौलुस शरीर को परमेश्वर के लिए बलिदान के रूप में पेश करने की बात कर रहा था; वह आराधना की भाषा का इस्तेमाल कर रहा था।

अन्य यह मानते हैं कि रोमियों 12:1 सिखाता है कि ''पूरा जीवन ही आराधना है'' और ''आराधना सेवाओं'' के बारे में अनावश्यक निष्कर्षों पर पहुंचे हैं। उदाहरण के लिए कई लोगों ने यह निर्णय लिया है कि यदि ''पूरा जीवन ही आराधना है,'' तो आराधना के लिए इकट्ठे होने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह निष्कर्ष इब्रानियों 10:25 के विपरीत है।

कुछ लोग यह ज़ोर देते हैं कि यदि किसी मसीही के लिए कुछ विशेष प्रकार की गतिविधि सही है, तो यह तभी ग्रहण योग्य होती है जब ''कलीसिया [आराधना के लिए] एक जगह इकट्ठी'' होती है (1 कुरिन्थियों 14:23)। यह मान्यता बिल्कुल, बिल्कुल गलत है। उदाहरण के लिए स्त्रियों का दिनचर्या में बातें करने और एक दूसरे से मिलने में कोई बुराई नहीं है, परन्तु वे

''स्त्रियों कलीसिया की सभा में ... क्योंकि स्त्री का कलीसिया [की सभा] में बातें करना लज्जा की बात है'' (1 कुरिन्थियों 14:34, 35)। फिर से कोई व्यक्ति सामान्य भोजन के समय पीने के लिए कॉफ़ी और अंगूर का रस ले सकता है, परन्तु प्रभु भोज लेते समय दाख के रस के साथ कॉफ़ी मिलाना उस यादगारी भोज को अपवित्र करना है। इसलिए ''सामूहिक आराधना'' (आराधना के लिए कलीसिया का इकट्ठा होना) और परमेश्वर की व्यक्तिगत, निजी सेवा में अन्तर किया जाना आवश्यक है।

रोमियों 12:1 का संदेश इन दोनों चरणों के बीच में कहीं है। हमें पौलुस की बात से क्या सीखना *चाहिए* कि अपने शरीरों को जीवित बलिदानों के रूप में पेश करना ''अनिवार्य'' है। आराधना की आत्मिक [या असंगत] सेवा है? सम्भवतया हमें कई बातें सीखनी आवश्यक हैं, जिनमें कुछ इस प्रकार हैं।

(1) हमें ''पवित्र'' और ''सांसारिक'' के बीच बहुत बढ़िया अन्तर नहीं करना चाहिए। बच्चों को ''प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए'' बड़े करना (इफिसियों 6:4) प्रवचन तैयार करने की तरह ही पवित्र कार्य है। सप्ताह भर के काम के लिए सचेत होना, इसे ''तन मन से करना, यह समझ कर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते'' हैं (कुलुस्सियों 3:23) धार्मिक लेख लिखने की तरह पवित्र है।

(2) हम जो भी करते हैं उसमें हमें सचेत होने की आवश्यकता है कि हम हमेशा परमेश्वर के सामने होते हैं इसलिए हमें उसी के अनुसार काम करना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति का जीवन रविवार के उसके जीवन से सोमवार से शनिवार के दिनों में अलग है, तो वह रविवार के दिन ''आत्मा और सच्चाई'' से आराधना नहीं कर सकता।

(3) चाहे हम अपने बच्चों का पालन पोषण कर रहे हों, प्रवचन तैयार कर रहे हों, प्रतिदिन का काम कर रहे हों, धार्मिक लेख लिख रहे हों या कोई और काम कर रहे हों, हमें हर बात में परमेश्वर को महिमा देने का सचेत प्रयास करना चाहिए। ''तुम्हारा उजियाला मनुष्य के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बढ़ाई करे'' (मत्ती 5:16)। पौलुस ने लिखा, ''चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो'' (1 कुरिन्थियों 10:31)।

अन्दर से बदला हुआ (12:2)

पौलुस की ताड़ना (आयत 2क, ख)

आयत 2 आरम्भ होती है, ''और,'' इसे पिछले आयत से जोड़ता है। पौलुस प्रभु को समर्पित होने की अपनी चर्चा को आगे बढ़ा रहा था। किसी ने कहा है, ''जीवित बलिदान के साथ मुख्य समस्या यह है कि यह वेदी के परे रेंगती रहती है।''[19] इसलिए पौलुस ने परमेश्वर के लिए समर्पित किए जाने वाले जीवन की अभी-अभी की गई अपील को फिर से दोहराने की आवश्यकता समझी।

(1) *नकारात्मक।* पौलुस ने एक नकारात्मक आज्ञा दी: ''इस संसार के सदृश न बनो'' (आयत 2क)। ''सदृश बनो'' का अनुवाद *suschematizo* से किया गया है। इस लम्बे शब्द के बीच में *schema* है जो ''रूप'' के लिए शब्द है[20]; इससे पूर्व *sun* (''के साथ'')। संसार का

अनुवाद ''युग'' के लिए शब्द *aion* से किया गया है। *Aion* का अर्थ प्राकृतिक संसार जैसे चट्टानें, पेड़ और फूल नहीं बल्कि वह है जिसे पौलुस ने एक जगह ''इस वर्तमान बुरे संसार [*aion*]'' कहा है (गलातियों 1:4)। नीचे पता चलता है कि पौलुस की इस ताड़ना को विभिन्न अनुवादों तथा संस्करणों में कैसे व्यक्त किया गया है:

> अब तुम अपने आपको इस वर्तमान संसार के जैसे न बनाओ (NEB)।
>
> इस संसार के व्यवहार तथा ढंगों की नकल न करो (NLT)।
>
> तुम्हारे आस पास का संसार तुम्हें अपने सांचे में न डाल ले (फिलिप्पस)।
>
> अपनी संस्कृति से इतने घुल-मिल न जाओ कि तुम बिना सोचे समझे भी इसमें मिल जाओ (MSG)।

संसार हम पर अपने मापदण्डों के अनुरूप फलने का दबाव बनाए रखता है।[21] यह दबाव मित्रों, परिवार के सदस्यों, पड़ोसियों, साथ काम करने वालों या सहपाठियों जैसे लोगों की ओर से हो सकता है। यह दबाव समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, पुस्तकों, संगीत, रेडियो, टेलीविज़न, फिल्मों, विज्ञापनों जैसी मीडिया की बातों से हो सकता है। ऐसा दबाव बढ़ता और बढ़ता ही जाता है। यह बहुत सूक्ष्म भी हो सकता है। संसार हमारे कानों में फुसफुसाता है कि जीवन का उद्देश्य व्यक्तिगत आनन्द है और यह कि यदि हम प्रसन्न हैं तो हमें दूसरों की तरह ही सोचना, काम करना, बातें करना और देखना आवश्यक है। संसार के मूल्यों के प्रबन्ध या जीवन शैली को बिना यह समझे स्वीकार करना आसान है। लोग स्वाभाविक रूप से दूसरों की नकल करने वाले होते हैं, और नकल करने के लिए केवल दो मूल प्रबन्ध उपलब्ध हैं। एक तो ''इस वर्तमान बुरे युग'' का है और दूसरा ''परमेश्वर की इच्छा'' में मिलता है (आयत 2ग)। पौलुस ने विनती की, ''इस संसार के सदृश *न* बनो।''

शायद यहां सावधान होने वाली एक बात कही गई है। ''इस संसार के सदृश न बनों'' का अर्थ यह नहीं है कि हम केवल अलग होने के लिए अलग होने का प्रयास करें। हाफर्ड लकॉक ने लिखा है:

> ... केवल अलग होने के लिए मेल असदृश का कोई महत्व नहीं है। यह तो अपरिपक्व सोच का चिह्न है, जो आम तौर पर ऐसा दिखाने वाले में पाया जाता है। सदृश्य का जीवन के कई पहलुओं में प्रभावकारी समाज की एक आवश्यकता है।[22]

हम सब ऐसे लोगों को जानते हैं, जो जहां तक सम्भव हो सके अलग और अजीब दिखाई देने और काम करने में गर्व समझते हैं। ऐसा व्यवहार उन्हें जो सुसमाचार को लेकर जाने की कोशिश कर रहे हैं दूसरों से दूर ही करेगा। हमें परमेश्वर की इच्छा के विपरीत सांसारिक बातों के सदृश नहीं होना चाहिए, परन्तु जिन्हें सिखाया जाना है उन्हें विरोधी बनाने के लिए हमें अपने ढंग को छोड़ना नहीं चाहिए।

(2) *सकारात्मक।* पौलुस ने नकारात्मक कहकर ही नहीं बंद कर दिया बल्कि उसने सकारात्मक बात भी कही: ''परन्तु तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता पाए'' (आयत 2ख)। ''बदलता

जाए'' *metamorphoo* का अनुवाद है। इस शब्द का केन्द्र, *morphe* से (''रूप'' के लिए एक और शब्द) के पूर्व *meta* आता है (''के साथ'' के लिए एक और शब्द)। इसी शब्द से हमें अंग्रेज़ी का ''मैटामौर्फोसिस'' शब्द मिलता है जिसका इस्तेमाल परिवर्तन, आम तौर पर नाटकीय परिवर्तन के लिए किया जाता है।[23] आम तौर पर झांझे के तितली में मैटामौर्फोसिस (कायापलट) का उदाहरण इस्तेमाल किया जाता है।[24] जितनी अद्‌भुत शारीरिक कायापलट की किस्म है उतनी ही मसीह में आने वाले के लिए आत्मिक कायापलट की सम्भावना है जो उससे भी अद्‌भुत है। कई माह पहले वर्ष के अन्त की आराधना सेवा में, मैंने एक व्यक्ति को यह कहते सुना कि मसीह ने उसका जीवन कैसे बदल दिया है। उसने कहा, ''बीस साल पहले, मैं एक शराबी था!'' अब वह व्यक्ति प्रभु की कलीसिया का एक विश्वासी और प्रभावी ऐल्डर है![25]

कई कारण जो मुझको स्पष्ट नहीं है कई लेखक कहते हैं कि वह ''बदलना'' कर्मवाच्य में है। यह इसे उसके बजाय जो *हम करते हैं* वह बना देता है *जो हमारे लिए* किया जाता है। कई अनुवादों तथा संस्करणों में '' *परमेश्वर को* तुम्हें बदलने दो'' या ऐसे शब्द मिलते हैं (TEV; CEV; NLT; फिलिप्पस)। फिर मैं यह कहता हूं कि मुझे नहीं मालूम कि इस पर दिया जाने वाला ज़ोर कैसे होता है। ''सदृश बनना'' और ''बदलना'' का यूनानी भाषा में अन्त एक जैसा है, परन्तु मुझे ऐसा कोई प्रकार नहीं मिला जिसने ज़ोर दिया हो कि '' 'सदृश,' कुछ ऐसा नहीं है, जो हम करते हैं, बल्कि कुछ ऐसा है जो हमारे लिए किया जाता है।'' दोनों शब्दों का अन्त कर्मवाक्य (जो हमारे लिए किया जाता है) या मध्य स्वर (जो हम अपने लिए करते हैं) दोनों में से कोई भी हो सकता है।[26] पौलुस ने इस भाग का आरम्भ ''इसलिए हे भाइयो, मैं *तुम से* विनती करता हूं'' के साथ किया यानी ज़ोर उस पर जो *हमें* करना चाहिए। तौभी यह याद रखना आवश्यक है कि हम बिना परमेश्वर की सहायता के ''सदृश्य न बनने'' या ''बदलना'' की किसी आज्ञा को नहीं मान सकते। अध्याय 7 और 8 यह स्पष्ट कर देते हैं कि प्रभु के बिना हम असहाय हैं।

पौलुस का विश्लेषण (आयत 2ग, घ)

(1) *कैसे?* हम कैसे ''बदल'' सकते हैं। पौलुस हमें बताने के लिए आगे बढ़ा: ''... तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने [*kainos* (''नया'') *ana* (''के पहले'')] से'' (आयत 2ग)। बदलाव *भीतर* से आता है। बिना भीतर बदलाव किए बाहर बदलाव करना कीचड़ में खेलने वाले लड़के को बिना नहलाए कपड़े पहनाने जैसा है। बाहर से बदलने के लिए, पहले अन्दर से बदलना आवश्यक है। मनुष्य ''जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है'' (नीतिवचन 23:7)।

मुझे लोन होल, ओक्लाहोमा में हाई स्कूल की साइंस की कक्षा का एक साधारण सा प्रदर्शन है। शिक्षक ने एक खाली, चौरस, एक गैलन का धातु का कैन लिया। उसने उस कैन का ढक्कन उतार दिया, उसमें कुछ पानी डाला और उसे चूल्हे पर रख दिया। थोड़ी देर बाद वह पानी उबलने लगा। रक्षात्मक दस्तानों का इस्तेमाल करते हुए शिक्षक ने ढक्कन वापस रख दिया, उसे कसकर बंद कर दिया और कैन को आग से हटा लिया। कुछ देर तक कुछ नहीं हुआ। फिर अचानक जैसे किसी बड़े से अदृश्य हाथों ने उस कैन को मसल दिया हो, वह अन्दर से बिल्कुल खत्म हो गया। मैं बहुत प्रभावित हुआ!

शिक्षक ने समझाया कि कैन को गर्म करने से हवा फैल गई और जिस कारण कैन में से कुछ हवा ने निकलने का दबाव बनाया। परिणाम यह हुआ कि वह बंद किया हुआ कैन ठण्डा हुआ, तो कैन के ऊपर ही हवा का दबाव कैन के बाहर की हवा के दबाव से कम था। इसी कारण बाहर के दबाव से कैन की साइडें टूट गईं। हम में से अधिकतर लोगों को हवा के दबाव का पता नहीं है, परन्तु दबाव तो है। समुद्र की सतह पर यह दबाव प्रति वर्ग इंच लगभग पन्द्रह पाउंड होता है![27] (हमारे शरीर सिकुड़ते नहीं हैं क्योंकि अन्दर का दबाव उतना ही है जितना बाहर का दबाव।)

वर्षों बाद जब मैं रोमियों 12:1, 2 का अध्ययन कर रहा था, मुझे हवा के दबाव के प्रदर्शन का स्मरण आया। मैंने सोचा, ''बहुत से लोगों को संसार की जीवन शैली के सदृश होने के लिए इसके दबाव का पता भी नहीं है। वे उस दबाव के सामने हार मान लेते हैं क्योंकि उनके *अंदर कुछ नहीं है* जो उन्हें उसका सामना करने के योग्य बनाए।'' एक अर्थ में पौलुस ने कहा कि संसार के दबाव से ''हमें अपने सांचे में ढालने'' से बचने का ढंग उस दबाव को नये किए गए मन से दूर करना है।

अपने मनों को नया बनाने के लिए हम (परमेश्वर की सहायता से) क्या कर सकते हैं? सम्भवतया हम सबसे महत्वपूर्ण कार्य जो कर सकते हैं वह यह है कि अपने मनों को उससे भर लें जो हमें नीचे खींचने के बजाय ऊपर को उठता है। यदि हमारे मन संसार के अनैतिक, अप्रासंगिक और स्वार्थी प्रभावों के सामने रहेंगे, तो हमारे मनों के लिए नया हो पाना असम्भव सा होगा। कहीं और, पौलुस ने लिखा है, ''... जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो-जो बातें सही हैं, और जो जो बातें शुद्ध हैं, और जो-जो बातें प्रिय हैं, और जो जो बातें अच्छी हैं, जो जो उत्तम और प्रशंसा के योग्य बातें हैं *उन्हीं* पर मन लगाया करो'' (फिलिप्पियों 4:8; 1977 NASB)।

हमें अपने मनों को परमेश्वर के वचन से भरना आवश्यक है और यह हम बाइबल पढ़ने तथा इसके अध्ययन से करते हैं।[28] हमारे विचार परमेश्वर पर केन्द्रित होने चाहिए; इस ध्यान की प्राप्ति मनन और प्रार्थना, और परमेश्वर के बनाए अद्भुत संसार पर ध्यान करके पाई जा सकती हैं (देखें रोमियों 1:20)। हमें ऐसे लोगों के साथ संगति करने की आवश्यकता है जिनके अपने जीवनों में आत्मिक बातों पर ज़ोर दिया जाता है; ऐसा हम मसीही संगति और आराधना के द्वारा करते हैं। सबसे बढ़कर, हमें यीशु पर अपना ध्यान लगाना और उसके जैसे बनने की कोशिश करना आवश्यक है। ''परन्तु हम सब ... जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश कर के बदलते जाते हैं'' (2 कुरिन्थियों 3:18)। इस प्रकार भीतरी मनुष्य ''दिन प्रतिदिन नया'' होता जाता है (2 कुरिन्थियों 4:16)। हम बाहर (शरीर) और भीतर (मन) दोनों से बदल जाएंगे।

(2) *क्यों?* अपने मनों को नया बनाना क्यों आवश्यक है? पौलुस ने आयत 2 के अन्त में एक (या शायद कई) कारण दिए: ''जिस से तुम परमेश्वर की भली,[29] और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो'' (रोमियों 12:2घ)। ''भली'' (*agathos*), ''भावती'' (*euarestos*; ''भाने वाली'') और ''सिद्ध'' (*teleios*; ''सम्पूर्ण, परिपक्व''), सभी परमेश्वर की इच्छा के उपयुक्त विवरण हैं। हमारी सोच को चुनौती देने वाला शब्द इस वचन में ''मालूम'' (*dokimazo*) है।

Dokimazo का इस्तेमाल धातु की परख के सम्बन्ध में किया जाता था। इसका अर्थ

''साबित करना''[30] परख करना, ''स्वीकृत करना'' सफल परीक्षण के परिणामस्वरूप थे। NIV में अपने अनुवाद में इन सभी विचारों को शामिल किया है: ''तब तुम उसकी *परख और स्वीकृति* के योग्य हो जाओगे जो परमेश्वर की इच्छा है।'' सवाल यह है कि आयत 2 में *dokimazo* का इस्तेमाल करते हुए पौलुस का *मुख्य* विचार क्या था?

कई लेखकों का विचार है कि पौलुस के मन में था कि हम *जान* सकें कि किसी भी परिस्थिति में परमेश्वर की इच्छा क्या है। मेकॉर्ड में है ''... ताकि तुम परमेश्वर की भली और मानने योग्य और सम्पूर्ण इच्छा का पता लगा सको।'' जे.बी. में है, ''परमेश्वर की इच्छा का पता लगाने और यह जानने का कि अच्छा क्या है, परमेश्वर क्या चाहता है, करने के लिए सिद्ध बात क्या है, एक ही ढंग है।'' मन को नया बनाने के लिए सुझाए गए आत्मिक अभ्यासों से परमेश्वर के वचन का ज्ञान और आत्मिक परख करने की समझ मिलेगी जो हमें यह निर्णय लेने में सहायक होगी कि किसी परिस्थिति में परमेश्वर हम से क्या करवाना चाहता है।

अन्य लेखकों ने ''परख करने'' या ''साबित करने'' की अवधारणा पर अधिक ज़ोर दिया है। विलियम बार्कले में है ''तुम्हारे अपने जीवन में, तुम साबित कर सकते हो कि परमेश्वर की इच्छा अच्छी और भावती और सिद्ध है।'' तुम इसे *अपने लिए* साबित करोगे; तुम यह कहने के योग्य होगे, ''हां, मैं आश्वस्त हूं कि परमेश्वर की इच्छा अच्छी है।'' फिर आप अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा को दिखाने पर, *दूसरों* पर भी साबित कर पाओगे कि यह सचमुच अच्छी है।

सारांश

क्या आप परिवर्तित जीवन जी रहे हैं? परिवर्तन का सम्बन्ध *बदलाव* से है और बदलाव आसान नहीं। जीवन भर के व्यवहार की गहरी, गहरी लीक से बाहर निकलना कठिन है, परन्तु हम परमेश्वर की सहायता से बदल *सकते* हैं। उस पर भरोसा रखते हुए हम पौलुस की चुनौती का सामना कर सकते हैं:

> ... अपने शरीरों को जीवित और पवित्र बलिदान के रूप में अर्थात आराधना की आत्मिक सेवा में पेश करो, जो परमेश्वर को स्वीकार्य है, और वे आप हैं। और इस संसार के जैसे न बनो, बल्कि अपने मन के नया हो जाने से बदल जाओ, ताकि तुम साबित कर सको कि परमेश्वर की इच्छा क्या है, जो अच्छी और स्वीकारयोग्य और सिद्ध है।

बदलाव पश्चात्तापी विश्वासी के रूप में बपतिस्मा लेने और ''जीवन के *नयेपन* में चलने'' के लिए उठने से होता है (रोमियों 6:4)। फिर जब आप अपना मन ''शरीर की बातों'' से हटाकर ''आत्मा की बातों'' पर लगाते हैं (8:5) तो यह बदलाव बना रहता है। अन्त में मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूं: ''क्या मसीह ने आपके जीवन में कोई अन्तर लाया है?''[31] यदि नहीं तो मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आज ही उसके साथ सम्बन्ध सुधार लें।

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

रीचर्ड रोजर्स ने रोमियों 12:1, 2 इस शीर्षक का इस्तेमाल किया: ''मसीही जीवन के लिए आधार।'' उसने कहा कि वे दो आयतें रोमियों की पुस्तक के ''अन्तिम भाग में पौलुस जो भी कहने

वाला था हर बात का आधार बनाती हैं।''[32]

हमारे वचन पाठ पर प्रचार करने के समय फर्टिस नियेडर ने ''बदलाव के लिए कदम'' बताते हुए चार बातें शामिल कीं: (1) पवित्रिकरण (आयत 1), (2) भेदीकरण (आयत 2क), (3) बदलाव (आयत 2ख) और (4) अवलोकन (आयत 3)।[33]

इस वचन में से सिखाने के लिए एक और सम्भावित विषय है ''संतुलन की आवश्यकता।'' लोग वचन की लगभग हर बात पर *अति* करने लगते हैं।

हमारे वचन पाठ के भागों का इस्तेमाल टैक्सचुअल या विषयात्मक पाठों के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए अपने शरीरों को आत्मिक बलिदान के रूप में देने के विचार पर ध्यान करें। पुराने नियम में लैव्यव्यवस्था 4; 5 वाली पाप बलियों और दोष बलियों में प्रायश्चित के लिए बलिदान आवश्यक होता था। क्रूस पर यीशु के बलिदान ने इनकी जगह ले ली। इसके अलावा स्वेच्छा से दी गई भेंटें (अन्य बातों के साथ) धन्यवाद को व्यक्त करती थी: लैव्यव्यवस्था 1–3 वाली होमबलियां, अन्नबलियां, मेल बलियां। नये नियम की ऐसी बलियां हमारा जीवित बलिदान है जो हम हैं, जो हमारे पास है और जो हम करते हैं।

एक अलग ढंग रोमियों 12 की तुलना मत्ती 5–7 से करना है। विलियम बार्कले ने कहा है *रोमियों* का बारहवां अध्याय इतना बड़ा नैतिक कथन है कि इसे हमेशा पहाड़ी उपदेश के साथ ही रखना चाहिए।[34] आप अपनी प्रस्तुति का नाम यीशु, पौलुस और आप रख सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर दि वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 317. [2]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 553. [3]आर. सी. बेल्ल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 133. [4]जे. डी. थॉमस, क्लास नोट्स, *रोमन्स,* अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज (1955)। [5]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 62. [6]ईस्ट साइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, लगभग 2004 में दिया गया डेल हार्टमैन का प्रवचन। [7]कुछ अनुवादों में ''दया'' एकवचन है, परन्तु यूनानी धर्मशास्त्र में यह शब्द बहुवचन है। [8]यह ''दयालुताओं'' के लिए (*eleos* से) के लिए सामान्य शब्द नहीं, बल्कि ''तरस'' के लिए यूनानी शब्द। ''दया'' और ''तरस'' के लिए शब्दों को आमतौर पर अदल बदल कर इस्तेमाल किया जाता है (देखें रोमियों 9:15)। [9]कई लेखकों का विचार है कि ''जीवित'' इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि मसीही लोग आत्मिक रूप में जीवित हैं। बपतिस्मा लेने के बाद हम ''जीवन का नयापन'' के लिए जी उठते हैं (रोमियों 6:4)। [10]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिनग: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 212.

[11]मेर्विन आर. *विनसेंट, वर्ड स्टडीज़* इन दि न्यू टैस्टामेंट अंक 3, *दि एपिस्टल्ज़ ऑफ़ पॉल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं.), 153. [12]थॉमस। [13]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 156. [14]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल क्लास में करते हैं तो आप रुककर इस प्रश्न पर चर्चा कर सकते हैं। एक समय में एक, शारीरिक देह के कुछ अंगों (भुजाओं, टांगों और हाथों) की ओर संकेत करें और प्रत्येक के विषय में पूछें, ''शारीरिक देह के इस अंग को परमेश्वर की सेवा में कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है?'' [15]स्टॉट, 322. [16]वाइन, 509. [17]बार्कले, 156–57. [18]*Latreia* ''आराधना'' के लिए नये नियम के मुख्य शब्दों में एक नहीं है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि

आराधना में से इसका अर्थ निकाल दिया जाए। [19]अज्ञात; ब्रूस बर्टन, डेविड वीरमन एंड नील विल्सन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 232 में उद्धृत। [20]पौलुस ने रोमियों 12:2 ''रूप'' के लिए दो अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल किया: ''सदृश'' में *schema* और ''बदलता'' में *morphe.*

[21]इस पद्य को जहां आप रहते हैं उस समाज के अनुकूल अपनाएं। [22]हाफर्ड ई. लब्बॉक, *प्रीचिंग वेल्यूस इन द एपिस्टल्स ऑफ़ पॉल,* अंक 1, *रोमन्स एण्ड फर्स्ट कोरन्थियंस* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1959), 77. [23]मत्ती 17:2 और मरकुस 9:2 में *metamorphoo* के एक रूप का अनुवाद ''रूपांतर'' हुआ है। मसीह का रूप शरीर में से उसके ईश्वरीयता के चमकने से *नाटकीय रूप से बदल गया* था। [24]ऐसे उदाहरण का इस्तेमाल करें जिससे आपके श्रोता परिचित हों-जैसे छुछ मछली का मेंढक में बदलना या कोई और प्राकृतिक कायापलट। [25]आप ऐसे उदाहरण दे सकते हैं जिनसे आपके सुनने वाले परिचित हों, परन्तु ध्यान रखें कि इससे कोई परेशान न हो। [26]अंग्रेज़ी में केवल दो स्वर हैं: कृतवाचक (जो हम करते हैं) और कर्मवाच्य (जो हमारे लिए किया जाता है)। यूनानी में तीन स्वर हैं: मध्य (जो हम अपने लिए करते हैं)। [27]यूनिवर्सिटी ऑफ़ इलिनोइस, उरबाना-शनपेन, ''एटमोस फ्रेरिसक'' प्रैसर (http://www.2010.atmos.uiuc.edu/(GH)/guides/mtr/fw/prs/def.rxmi; Internet; accessed 10 May 2006). को देखा गया। [28]अब तक ग्यारह अध्यायों में हम ने मन के ''नया होने'' के लिए पौलुस के निर्देशों का अध्ययन किया है। [29]अंग्रेज़ी में ''इज़'' शब्द है जो मूल धर्मशास्त्र में नहीं मिलता; इसे अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। [30]वाइन, 35.

[31]जिम्मी एलन, *सर्वे ऑफ़ रोमन्स,* चौथा संस्क., संशो. (सरसी, आरकैंसा: लेखक द्वारा, 1973), 103. [32]रिचर्ड रोजर्स, *पेड इन फुल: ए कमैंट्री ऑन रोमन्स* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसैट इंस्टीट्यूट प्रैस, 2002), 167. [33]प्रेसटन रोड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, डलास, टैक्सस, तिथि नहीं., कैसेट में दिया गया प्रेंटिस मिएडर, का सरमन। [34]बार्कले 6.